International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 1, Jan.-Feb., 2024, Impact Factor: 8.376

आकांक्षा पारे की कहानियों में सामाजिक यथार्थ का स्वरूप एवं विश्लेषण सामाजिक

गरिमा दूहन

शोधार्थी, हिंदी साहित्य विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

शोध पत्र

सामाजिक यथार्थ समिष्ट का यथार्थ है जिस में कलाकार कहानीकार सामाजिकयथार्थ के साथ–साथ, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और साहित्यिक यथार्थ का भी मूल्यांकन करता है। यथार्थ का सामान्य अर्थ है– समाज का यथार्थ अर्थात समाज की वास्तविकता का चित्रण। एक उमदा कहानीकार की भाँति आकांक्षा पारे ने भी समाज की तमाम विडंबनाओ को अपनी कहानियों में आत्मसात करते हुए बड़े ही सुक्ष्म तरीके से सामाजिक यथार्थ के माध्यम से समाज के बृहतर सत्य को सामने लाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध यत्र में आकांक्षा पारे की कहानियों के माध्यम से समाजिक यथार्थ के 'मूल' में विद्यमान विभिन्न कारक तत्व– अर्थ, धार्मिक, एवं संस्कृतिक– का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः यथार्थ, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक।

प्रस्तावना

कहा जाता है कि समाज साहित्य को प्रभावित करता है इसलिए साहित्य सामाजिक परिवर्तन का एक जीवंत दस्तावेज माना जाता है। किसी भी साहित्यिक रचना के अस्तित्व में आने के पीछे सामाजिक कारण विद्यमान होते हैं। आधुनिक कहानीकारों ने कहानी लेखन में मनुष्य जीवन और समाज के सभी रंगों को बड़ी भावात्मकता और कलात्मकता के साथ डकेरा है। एक ओर जहाँ इस समय की कहानियों में नारी मुक्ति की छटपटाहट है, तो कहीं किसी परिवार के आपसी संबंधों की समस्या है इसके साथ–साथ अकेले होते आधुनिक जीवन का खोखलापन भी है। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक तक जब गांव–गांव में सूचना और संचार क्रांति के साधन उपलब्ध हो गए हैं तो ऐसे समय में इसके जटिल यथार्थ आकांक्षा पारे की कहानी "शिफ्ट+कंट्रोल+अल्ट = डिलीट" बड़ी बारीकी से व्याख्यायित करती है जिसमें मानवीय संवेदनाओं के स्तर पर इस तीव्र गामी तकनीक के कितने घातक परिणाम हो सकते हैं, इसका यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में आकांक्षा पारे की कहानियों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ के 'मूल' में विषमान विभिन्न कारक तत्वों अर्थ, धार्मिक एवं सांस्कृतिक का अध्ययन किया गया है। पारे की कहानियों में व्यक्ति के जीवन में तथा सोच में आये बदलावों के कारण सामाजिक मूल्यों में आये परिवर्तनों का यथार्थ चित्रण दिखलाई पड़ता हैं। शैलजा भी इन्हीं बदलाव को ध्यान ध्यान में रखकर रहती हैः "कुल मिलाकर समकालीन कहानी जीवन के यथार्थ को अत्यंत गहरे धरातल पर व्यक्त करती हुई मनुष्य की अस्मिता के संकट के साथ व्यापक स्तर पर मूल्य संकट के घेरों से जूझती है।"[1] आकांक्षा जी की कथा साहित्य का अध्ययन करने पर एक सामान्य तथ्य उभरता है की साहित्य का संबंध समाज तथा उसके परिवेश के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। कथा साहित्य के अध्ययन के आधार पर समाज कई भागों में विभाजित होता है; अर्थ के आधार पर, धर्म के आधार पर तथा सांस्कृतिक स्तर पर।

पारे की कहानियाँ "समाज" तथा उसकी विभिन्न समस्याओं का बहुआयामी परंतु वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करती हैं।इस शोध पत्र में सबसे पहले समाजवादी यथार्थवाद के मूल में व्याप्त आर्थिक यथार्थ को पारे की कहानियों 'मणिकर्णिका' एवं 'जादूगर' के माध्यम से शब्द चित्रित किया है। सामाजिक यथार्थ की संकल्पना या संदर्भ में डॉक्टर त्रिभुवन सिंह लिखते हैः "सामाजिक यथार्थवाद का अर्थ है– समाज की वास्तविक अवस्था का यथार्थ

चित्रण।"[2] अतः सामाजिक यथार्थ वस्तुतः समिष्ट का यथार्थ है जिसमें आर्थिक यथार्थ प्रमुख रूप से सम्मिलित है। कहानीकार ने अपनी कहानियों में मिथकों को ना छूकर वास्तविक परिवेश को दर्शाया है 'मणिकर्णिका' में निम्न वर्ग की लड़कियों द्वारा अपने परिवार की अर्थव्यवस्था में सहयोग एवं विशेषकर रोजी–रोटी कमाने के लिए किए जाने वाले होने वाले संघर्ष की अति वास्तविक अभिव्यक्ति की है। इस कहानी में धन का अभाव एवं धनोभाव से उत्पन्न तनाव तथा पारिवारिक क्लेश इस ढंग से प्रस्तुत किया गया है कि कहानी में समकालिनता तथा जीवित वास्तविकता का समागम नजर आता है।

आर्थिक तंगी के कारण छोटी–छोटी बातों से बढते मनमुटाव को पारे ने शब्दों में चित्रित करते हुए लिखा–"घर में दादी और उसके सिवा बस हवा थी जो दरवाजे बजा रही थी। फिर भी दादी दरवाजे की तरफ मुंह कर जोर–जोर से गलियाँ बकने लगीं। फिर शोभा की तरफ मुहं करके उसी पर चिल्लाने लगी कि उस आवारा लड़के के मुंह क्यों लगाया। दादी ने भाई को खूब गालियां सुनाई। उसके दो कारण थे मां के सामने उनके लाडले को इतनी गालियां बकना आसान नहीं था। दूसरा हफ्ते भर के भर से खीर की संजोई हुई आस अभी–अभी धूमिल हो गई। दादी जानती थी एक लीटर दूध दोबारा तो आ सकता "[3] इसी प्रकार 'जादूगर' कहानी भी आर्थिक अभाव के कारण क्षत–विक्षत होते जन जीवन को गहराई से आंकती है।

तथा इसे दिखाने के लिए लेखिका ने जिस परिवेश को दर्शाया है, वह विश्वसनीय एवं यथार्थपूर्ण है। जादूगर कहानी में विशेष परिस्थितियों में संपूर्ण निम्न वर्ग के दर्द को उभारा गया है। इस कहानी का पात्र अपनी बहन की शादी के लिए पैसे इकट्ठा करता है। जिसका वर्णन करते हुए पारे इस पात्र के संवाद को इस प्रकार शब्द चित्रित करती हैं: "मेरे घर के पास एक अस्पताल है। वहां की नर्स दीदी से मेरी अच्छी जान पहचान हो गई है। वहीं कभी–कभी खून देता हूं। अच्छे पैसे मिल जाते हैं। कुछ कर्ज भी लिया हैं।"[4] आकांक्षा पारे का कथा साहित्य व्यक्ति के अंदर झांकते हुए, उसके अतः करण की परतों को खोलती नजर आती है। यह कहानियाँ धन के अभाव में उत्पन्न होने वाली उदासी, खिन्नता, चिंता एवं असहायता को व्यक्त करती हैं। लेखिका ने मजदूरी कर अपना एवं अपने परिवार का पेट भरने वाले निम्नवर्गीय युवक एवं युवतियों के जीवन की विपनंता एवं त्रास का वास्तविक चित्रण किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में पारे के कथा–साहित्य में निहित सामाजिक यथार्थ के मूल में उपस्थित धार्मिक कारक तत्व का अत्यंत स्वाभाविक एवं वास्तविक व्यख्यान को दर्शाने का प्रयास किया गया है। पारे ने धार्मिक तत्वों के संदर्भ में जो यथार्थ प्रस्तुत किया है, वह सामान्यजन का यथार्थ है। इनकी कहानी 'बहतर धड़कने, तिहतर अरमान' में हिंदू और मुसलमान धर्मों का यथार्थ प्रस्तुत किया गया है। यह कहानी इंटररिलिजन शादी का बेहद सशक्त पहलू प्रस्तुत करती है। असल जिंदगी में दो अलग धर्मों के अलग–अलग रीति–रिवाजों के साथ बड़े हुए इंसान आपस में सहमति बन पाएं, यह भी आसान नहीं हैं। पारे लिखती है "नौरिन ने मेहंदी तो लगा ली, लेकिन जी व्रत रखने से मना कर दिया। उसने कहा, हमारे धर्म में नहीं होता और फिर वह पूरे दिन वह भूखी प्यासी नहीं रह पाएगी। अब आप ही बताएं मां को तो बुरा लगेगा ही न। भई रमजान भी तो उसके यानी उसकी मां के धर्म में नहीं होता।"[5]

पारे की कहानी धार्मिक यथार्थ के पहलू को प्रस्तुत करते हुए दर्शाती है कि सिर्फ प्रेम ही काफी नहीं होता किसी शादी को कामयाब बनाने में, अपितु एक दूसरे के धर्म एवं धार्मिक विचारों एवं रीति–रिवाजों के बीच सामंजस्य भी अत्यंत आवश्यक होता है अन्यथा दाम्पत्य जीवन फैमिली कोर्ट में पहुंच जाता है। इसी के सही स्वरूप को दिखाने के लिए पारे आगे लिखती है "उसने ऐन पूजा के वक्त शाम को कहा कि चाहे जो भी हो जाए, वह बुत परस्ती नहीं करेगी। मां भी इस बार हार मानने के मूड में नहीं थी। उन्होंने भी कह दिया कि यदि वह आज पूजा पर नहीं बैठी तो इस घर में कल से वह नमाज नहीं पढ पाएगी।"[6]

अतः पारे की इस कहानी में पूजा करना, भगवान का नाम, जपना, या नमाज पढ़ना तथा इंटररिलिजन मैरिज की असफलता,आज के समाज में भी अपने ही धर्म में विवाह करने के यथार्थ को प्रस्तुत करती है। सांस्कृतिक तत्वों के संदर्भ में समाज को जो यथार्थ पारे जी ने अपनी कथा साहित्य में चित्रित किया है वह आज के संदर्भ में सच्चाई के अत्यंत निकट है। आज के आधुनिक परिवेश में हो रहे सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन को पारे के कथा–संग्रह 'बहतर धड़कने तिहत्तर अरमान' में निहित कहानी 'सखि–साजन' तथा 'तीन सहेलियां, तीन प्रेमी' कहानी संग्रह में निहित शीर्षक कहानी में यथार्थ चित्रित किया है। सखि–साजन कहानी में समलैंगिक संबंधों को दर्शाया गया है। यद्यपि पाश्चात्य सभ्यता में इस तरह के संबंधों को स्वीकार कर लिया

गया है। परंतु भारतीय समाज में समलैंगिक संबंधों को आज भी मान्यता नहीं मिली है। बल्कि समलैंगिक संबंधों को संस्कृतिक मूल्यों का पतन माना जाता है। कहानी की नायिका को मां का नायिका की डायरी में उसके समलैंगिक संबंधों के बारे में पढ़कर लिजलिजा महसूस करना तथा उबकाई आना स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारतीय माता–पिता अपने बच्चों कोई से तरह के संबंधों को स्वीकार नहीं कर पाते । पारे सखि साजन में लिखती है' "जब वह मुझे चूमती है तो लगता है मैं हवा में उड़ रही हूं। उसके कोमल हाथ जब मेरे शरीर को छूते हैं तो.... मुझे यह पढना ही लिजलिजा अनुभव दे जाता है। उबकाई आती है। आगे पढ़ने का मन नहीं करता। यकीन नहीं होता मेरी बेटी ने किसी लड़की के साथ...."[7]

इसी तरह शादी जैसे पवित्र संबंधों को उड़ते मजाक का यथार्थ चित्रण भारतीय समाज के सांस्कृतिक मूल्यों में आती हुई गिरावट को दर्शाते हैं। पारे की कहानी संग्रह 'तीन सहेलियां, तीन प्रेमी' तथा विशेषकर इस कहानी संग्रह की शीर्षक कहानी संस्कृतिक यथार्थ का विभत्स रूप प्रस्तुत कराती नजर आती है। शीर्षक कहानी में तीनों स्त्रियां आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी अधेड़ आयु के पुरुषों से संबंध बनाती दिखाई गई है। यद्यपि ये स्त्रियां इस वास्तविकता से भली– भांति परिचित है कि ये पुरुष कभी भी अपनी पत्नियों को तलाक नहीं देंगे, फिर भी बेवकूफों की तरह उनके मकड़ जाल में फंसी रहती हैं। पारे द्वारा रचित कहानी "पवित्र" में नयिका काअपना साथी उसका कौमार्य भंग कर देता है। वह कहानी में कहीं भी इस स्थिति से बचने का प्रयास करती नजर नहीं आती । इस प्रकार पारे के कथा साहित्य में सांस्कृतिक मूल्यों में हो रहे अवमूल्यन का जो यथार्थ प्रस्तुत किया है, यह सच्चाई के एक दम नजदीक है।

निष्कर्षतः

यह कहा जा सकता है कि साहित्य और जीवन के बीच यथार्थ एक पगडंडी है जो तब अधिक स्पष्टता से लक्षित की जा सकती है जब उसका आधार सामाजिक सत्य हो। आकांक्षा पारे आधुनिक युगीन परिवेश के प्रति सजग तथा सचेत दृष्टिकोण रखती है। इन्होंने अपने कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ के स्वरूप को समझाते हुए, सामाजिक यथार्थ के मूल कारक तत्वों अर्थात आर्थिक, धार्मिक एवं संस्कृति यथार्थ का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है। पारे ने अपनी कहानियों में जो लिखा है, वह उनका देखा और परखा हुआ यथार्थ है। इन्होंने स्वयं वह आसपास के सामाजिक परिवेश में निहित आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक तत्वों को देखते तथा अनुभव करते हुए मनुष्य जीवन में अर्थ का महत्व, इटररिलिजन मैरिज में अलग–अलग धर्म के रीति–रिवाजों का अर्थ तथा समाज में गिरते हुए सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य से संबंधित प्रश्नो एवं विसंगतियों का अत्यंत ही समन्वित (वास्तविक) चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

संदर्भ ग्रथ सूचीः–

- शैलजा,((2017) समकालीन हिंदी कहानीः बदलते जीवन संघर्ष, नई दिल्ली, वाणीप्रकाशन, पृष्ठ संख्या 70।
- सिंह, त्रिभुवन, हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद, हिंदी प्रचारक पब्लिकेशन प्रा० लि०, वाराणसी पंचम संस्करण 2054 पृष्ठ संख्या 242।
- तीन सहेलियां तीन प्रेमी, मणिकर्णिका, पृष्ठ संख्या 68।
- तीन सहेलियां तीन प्रेमी, जादूगर, पृष्ठ संख्या 16।
- बहतर धड़कने तिहत्तर अरमान, पृष्ठ संख्या 14–15।
- बहतर धड़कने तिहत्तर अरमान, पृष्ठ संख्या 16।
- बहतर धड़कने तिहत्तर अरमान, सखि साजन, पृष्ठ संख्या 23।